दिनांक - 09-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेक्चरर का नाम :- डॉ॰ फ़ारूक आलम (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

सेमेस्टर :- द्वि॰

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- छठी शताब्दी ईसा पूर्व स्त्रोत

(6) चेदि - आधुनिक बुंदेलखंड के आस-पास यह महाजनपद स्थित था प्रसिद्ध शत्रु शिशुपाल चेदि वंश का ही था। चेदि की राजधानी सोथवती थी तथा इसके अन्य मुख्य नगर सहजाति एवं त्रिपुरी थी।

(7) वत्स :- वत्स महाजनपद वर्तमान इलाहाबाद के क्षेत्र में स्थित था। इसकी राजधानी कौशांबी थी।

Scanned with CamScanner

विष्णु पुराण के अनुसार हस्तिनापुर के राजा निचक्षु ने हस्तिनापुर के बाद मे नष्ट होने पर कौशांबी को ही अपनी राजधानी बनाया था।

बुद्ध काल में यहाँ पौरवंश का शासन था जिसका प्रसिद्ध राजा उदयन था। उदयन का प्रेम संबंध अवंति राजकुमारी वासवदत्ता से था।

(8) कुरु – दिल्ली मेरठ तथा थानेश्वर के क्षेत्र तक फैले कुरु राज्य की राजधानी इन्द्रप्रस्थ थी। माना जाता है कि कुरु राज का संबंध युधिष्ठिर परिवार से था अर्थशास्त्र तथा अन्य ग्रंथों में कुरु को राजशब्दोपजीविन कहा गया है। बुद्ध काल में यहाँ का शासक कौरव्य था पहले कुरु एक राजतंत्र था परंतु बाद में यह गणतंत्र बन गया

(9) पांचाल – आधुनिक रुहेलखंड के बरेली, बदायुं तथा फर्रुखाबाद खंड में स्थित पांचाल महाजनपद के प्रारंभ

में दो भाग थे।

(1) उत्तरी पांचाल जिसकी राजधानी अहिच्छत्र थी।

(2) दक्षिणी पांचाल जिसकी राजधानी काम्पिल्य थी।

कन्यकुब्ज नामक प्रसिद्ध नगर इसी महाजनपद का भाग था।

(10) मत्स्य - मत्स्य महाजनपद जयपुर - भरतपुर अलवर क्षेत्र में स्थित था। इसकी राजधानी विराटनगर थी। इसे बाद में मगध साम्राज्य में मिला लिया गया।

(11) सूरसेन: इस महाजनपद की राजधानी मथुरा थी। पुराण तथा महाभारत में मथुरा के शासक का यदुवंशीय कहा गया है।

प्राचीन युनानी लेखक इस राज्य को शूरसेनोई तथा इसकी राजधानी को मोथेरा कहते हैं।

बुद्धकाल में यहाँ का शासक अवन्तिपुत्र था। जो बुद्ध का प्रमुख शिष्य था। मज्झिम निकाय से पता

Scanned with CamScanner

चलता है कि अवन्तिपुत्र का जन्म अवन्ति नरेश चंड प्रद्योत की कन्या से हुआ था।

(12) अश्मक :- (अस्सक, अवश्यक) - यह महाजनपद गोदावरी नदी तट पर स्थित एक मात्र ऐसा स्थल था जो नर्मदा के दक्षिण में स्थित था। इसकी राजधानी पातीन या पोतना थी। पुराणो से ज्ञात होता है कि अश्मक में राजतंत्र की स्थापना इच्छावाकुवंशीय शासको ने की। चुल्लकालिंग जातक के अनुसार अस्मक में राजा अरुण ने कलिंग के शासक को जीता था। महात्मा बुद्ध के पूर्व अस्मक का अवंति महाजन पद से संघर्ष चलता रहा था जिसमें अंततः अवंति को सफलता प्राप्त हुई।

(13) अवंति :- इस राज्य का मुख्य क्षेत्र मोटे तौर पर मध्य प्रदेश के उज्जैन से लेकर नर्मदा नदी तक फैला हुआ था। तथा यह दो भागो में विभाजित था। उत्तरी अवंति की राजधानी

उज्जैन तथा दक्षिणी अवंति की राजधानी महिष्मति थी।
गौतम बुद्ध के समय अवंति का शासक चण्डप्रद्योत
था। मगध शासक शिशुनाग के समय अवंति मगध
साम्राज्य में मिला लिया गया।
पुराणों में अवंति की आधार शिला रखने का श्रेय यदु
ओं के हैहय वंश को दिया गया है।

(14) गंधार :- गंधार महाजनपद वर्तमान पाकिस्तान के
पेशावर तथा रावलपिंडी जिले में स्थित था। इसकी राज
धानी तक्षशिला थी। इस महाजनपद का दूसरा प्रमुख
नगर पुष्कलावती थी। छठी सदी ईसा पूर्व में गंधार
पर पुक्कसती अथवा पुष्करसारिन नामक शासक शास
न कर रहा था। उसने मगध शासक बिम्बिसार के
दरबार में अपना दूतमंडल भी भेजा था। परवर्ती काल
में गंधार पर फारस का अधिकार हो गया।

Scanned with CamScanner

(15) कंबोज – यह पश्चिमी सीमा का दूसरा महत्वपूर्ण राज्य था। इसकी राजधानी हाटक या राजपुर थी। इस के दो महत्वपूर्ण शासक चन्द्रवर्धन और सुदक्षिण थे। अर्थशास्त्र में कंबोज को वार्त्ताशास्त्रोपजीवि संघ अर्थात कृषकों चरवाहे, व्यापारियों तथा योद्धाओं का संगठन कहा गया है।

(16) मगध – मगध महाजनपद में अधुनिक पटना, गया तथा शाहाबाद का क्षेत्र शामिल था। इसकी प्राचीन राजधानी राजगृह (गिरिव्रज) थी बाद में उदयन के समय इसकी राजधानी पाटलिपुत्र हो गई। पुराणों के अनुसार इस वंश का प्रथम शासक शिशुनाग था किंतु बौद्ध लेखक इसकी वंशावली हर्यक वंश के प्रथम शासक बिम्बिसार से प्रारंभ करते हैं। उसका शासन काल 544 ई० पूर्व से 492 ई० पूर्व था। महा वंश में बिंबिसार को महित्स या भाटीय का पुत्र बताया गया

है जबकि अश्वघोष के बुद्ध चरित्र में बिम्बिसार को हर्यक कुल से संबंध माना गया है।

बिम्बिसार का वृज्जि (लिच्छवी) कोशल तथा मद्र क्षेत्रों से वैवाहिक संबंध था। वैवाहिक संबंधों के बदले कोशल से इसे काशी का गाँव प्राप्त हुआ जिसकी आय दस लाख सिक्के वार्षिक थी। इस बात से संकेत मिलता है कि उस समय भू-राजस्व का आकलन मुद्रा में होने लगा था।

बिम्बिसार ने अंग के शासक ब्रह्मदत्त को पराजित कर के अंग को मगध साम्राज्य में मिला लिया था तथा अजातशत्रु को वहाँ का उपराजा नियुक्त किया। संभवतः ये मगध साम्राज्यवाद की पहली सीढ़ी थी।

बिम्बिसार ने गिरिव्रज को राजधानी के रूप में स्थापित किया।

अंतिम समय में उसके पुत्र तथा युवराज था।

Scanned with CamScanner